

सार्जेंट्स अफेयर: ब्रिटिश मंडेट ऑफ़ फ़िलिस्तीन में एक दुखद घटना

ब्रिटिश मंडेट ऑफ़ फ़िलिस्तीन के अंतिम अशांत वर्षों में, भविष्य के इज़राइली प्रधानमंत्री मेनकेम बेगिन के नेतृत्व में यहूदी भूमिगत समूह इर्गुन ने ब्रिटिश प्राधिकार के खिलाफ हिंसक अभियान चलाया। उनकी कार्रवाइयों में अरब बाज़ारों पर बमबारी, ब्रिटिश सैन्य और प्रशासनिक ठिकानों पर हमले और उच्च-स्तरीय अपहरण शामिल थे। यद्यपि ये राष्ट्रीय उद्देश्यों से प्रेरित थीं, इनमें से कई कार्रवाइयाँ — विशेष रूप से नागरिकों को निशाना बनाने वाली या भय पैदा करने वाली — आज व्यापक रूप से स्वीकृत आधुनिक परिभाषाओं के अनुसार स्पष्ट रूप से आतंकवाद के रूप में मान्यता प्राप्त होतीं।

ब्रिटिश अधिकारियों ने गिरफ्तारियाँ, सैन्य मुकदमे और पकड़े गए इर्गुन लड़ाकों की फाँसी सहित कठोर प्रतिकार किए। इस अवधि की सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक थी सार्जेंट्स अफेयर, जो मई 1947 में अक्रे जेल ब्रेक के दौरान पकड़े गए तीन इर्गुन सदस्यों की मौत की सजा से शुरू हुई। ब्रिटिश बलों के खिलाफ हिंसक कृत्यों — जिसमें विस्फोटकों का उपयोग और सशस्त्र प्रतिरोध शामिल था — के दोषी पाए जाने पर अवशालोम हाविव, मेयर नकार और याकोव वेइस को फाँसी की सजा सुनाई गई।

अपहरण

ब्रिटिश खुफिया और सैन्य अधिकारियों द्वारा बढ़ती धमकियों और स्पष्ट चेतावनियों के बावजूद, इर्गुन ऑपरेटिव्स द्वारा अपहरण का जोखिम अक्सर मैदान पर मौजूद कर्मियों द्वारा कम आँका या अनदेखा किया जाता था। ऐसा ही हुआ सार्जेंट क्लिफोर्ड मार्टिन और मर्विन पेस के साथ, दोनों केवल 20 वर्ष के और 1947 की गर्मियों में ब्रिटिश आर्मी इंटेलिजेंस कोर की 252 फ़िल्ड सिक्योरिटी सेक्शन में सेवा दे रहे थे। 11 जुलाई 1947 को दोनों सार्जेंट ड्यूटी से बाहर थे, निहत्थे और सिविल कपड़ों में। उन्होंने नेतन्या में समय बिताने का फैसला किया, एक तटीय शहर जो अपनी यहूदी आबादी और भूमिगत गतिविधियों के लिए जाना जाता था। उन्होंने नेतन्या के एक कैफे का दौरा किया और हारून वेनबर्ग से बातचीत की, जो एक यहूदी शरणार्थी और ब्रिटिश सैन्य रिसॉर्ट कैप में स्थानीय क्लर्क था।

सार्जेंट्स को पता नहीं था कि वेनबर्ग डबल एजेंट के रूप में काम कर रहा था, जो गुप्त रूप से हगनाह और इर्गुन दोनों से जुड़ा हुआ था। ब्रिटिश अधिकारियों का विश्वास हासिल करने के बाद, वेनबर्ग ने सार्जेंट्स के साथ अपनी मुलाकात की सूचना इर्गुन नेतृत्व को दी। संगठन ने खुफिया जानकारी पर कार्रवाई के लिए तुरंत एक टीम जुटाई। ऑपरेशन का नेतृत्व बेंजामिन कपलान ने किया, जो एक अनुभवी इर्गुन ऑपरेटिव था जिसे नाटकीय अक्रे जेल ब्रेक के दौरान मुक्त किया गया था — वही छापा जिसके लिए तीन इर्गुन सदस्य अब फाँसी की प्रतीक्षा कर रहे थे।

जब मार्टिन और पेस कैफे से बाहर निकले, तो इर्गुन इकाई ने उन्हें घेरकर अपहरण कर लिया। उन्हें नेतन्या में एक छिपे हुए स्थान पर ले जाया गया: एक हीरा पॉलिशिंग प्लांट, जिसे अस्थायी हिरासत स्थल में बदल दिया गया था। वहाँ उन्हें एक तंग, हवा-रोधी भूमिगत सेल में कैद किया गया, जहाँ उन्हें सीमित बोतलबंद ऑक्सीजन, भोजन और पानी की आपूर्ति से अठारह दिनों तक जीवित रखा गया। शारीरिक स्थितियाँ भयावह थीं, लेकिन मनोवैज्ञानिक युद्ध का तत्व समान रूप से शक्तिशाली था: अपहरण एक जानबूझकर की गई रणनीति थी ताकि ब्रिटिश अधिकारियों को इर्गुन कैदियों की योजनाबद्ध फाँसियों पर पुनर्विचार करने के लिए मजबूर किया जा सके। इस अर्थ में, अपहरण एक प्रतिशोधी धमकी और रणनीतिक दबाव का कार्य दोनों था।

बंधक वार्ताएँ

इर्गुन का उद्देश्य सार्जेंट्स को सौदेबाजी की चिप के रूप में उपयोग करना था ताकि तीन इर्गुन उग्रवादियों — अवशालोम हाविव, मेयर नकार और याकोव वेइस — की फाँसी रोकी जा सके, जिन्हें मई 1947 में अक्रे जेल ब्रेक के दौरान पकड़ा गया

था। तीनों को अवैध हथियार रखने और नुकसान पहुँचाने के इरादे के लिए दोषी ठहराया गया था, और उनकी मौत की सजाएँ ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा 8 जुलाई को पुष्टि की गई थीं। इर्गुन ने सार्वजनिक धमकी जारी की: यदि फाँसियाँ हुईं, तो मार्टिन और पेस को बदले में फाँसी दी जाएगी।

अपहरण की खबर फैलने के साथ ही सार्जेंट्स की रिहाई के लिए प्रयास तेज़ हो गए। 17 जुलाई को ब्रिटिश सांसद रिचर्ड क्रॉसमैन और मॉरिस एडेलमैन ने उनकी स्वतंत्रता के लिए सार्वजनिक अपील की, जिसमें अन्य प्रमुख हस्तियाँ और निजी नागरिक शामिल हुए। मर्विन पेस के पिता ने मेनकेम बेगिन को एक मार्मिक पत्र लिखा, अपने बेटे की जान की भीख माँगी। पत्र इर्गुन से जुड़े एक डाक कर्मचारी के माध्यम से बेगिन तक पहुँचा, लेकिन बेगिन ने इर्गुन की गुप्त रेडियो स्टेशन कोल ट्सियोन हलोखेमेट पर रेडियो प्रसारण के माध्यम से ठंडे ढंग से जवाब दिया: „आपको अपनी उस सरकार से अपील करनी चाहिए जो तेल और खून की प्यासी है!“

इस बीच, ब्रिटिश खुफिया और सुरक्षा सेवाओं ने बंधकों को खोजने और बचाने के लिए गहन अभियान शुरू किया। एक सूचना के आधार पर उन्होंने नेतन्या हीरा पॉलिशिंग प्लांट की तलाशी ली, लेकिन मिशन विफल रहा। सार्जेंट्स को एक छिपी हुई हवा-रोधी भूमिगत सेल में रखा गया था — एक विवरण जिसने स्निफर डॉग्स और मानक खोज तकनीकों को अप्रभावी बना दिया।

सार्वजनिक अपीलों के बढ़ते दबाव, संभावित प्रतिशोध के नैतिक बोझ और स्थिति की निर्विवाद तात्कालिकता के सामने ब्रिटिश अधिकारियों ने अपनी स्थिति बनाए रखी। आतंकवादियों से बातचीत न करने की अपनी लंबी नीति का पालन करते हुए, उन्होंने निर्धारित फाँसियों को अंजाम देने का फैसला किया। 27 जुलाई को पैलेस्टाइन ब्रॉडकास्टिंग कंपनी ने घोषणा की कि हाविव, वेइस और नकार को 29 जुलाई को फाँसी दी जाएगी। 29 जुलाई 1947 को हाविव, नकार और वेइस को अक्रे जेल में फाँसी दे दी गई।

हत्याएँ और उनका भयावह परिणाम

फाँसियों से क्रुद्ध होकर मेनकेम बेगिन ने मार्टिन और पेस की तत्काल हत्या का आदेश दिया। 29 जुलाई की शाम को सार्जेंट्स को एक जानबूझकर कूर और प्रतीकात्मक कार्य में मार डाला गया। इर्गुन ऑपरेटिव्स ने पियानो तार का उपयोग फाँसी के लिए किया। इस विधि ने धीमी और पीड़ादायक मौत सुनिश्चित की — ब्रिटिश फाँसी के त्वरित गिरावट के विपरीत एक भयानक अंतर। विधि ब्रिटिश निष्पादन शैली का सीधा प्रतिकार थी — एक गणना की गई क्रूरता जो संदेश भेजने के लिए थी।

हत्याओं के बाद इर्गुन ने शवों को नेतन्या के पास एक एकांत यूकेलिप्टस वन में पहुँचाया। वहाँ शवों को पेड़ों से लटकाया गया, चेहरे पट्टियों से ढके, शर्ट आंशिक रूप से हटाई गई और इस तरह रखा गया कि उनकी कमजोरी और अपमान उजागर हो। झटका बढ़ाने और त्वरित पुनर्प्राप्ति को रोकने के लिए इर्गुन ने सार्जेंट मार्टिन के शव के नीचे एक संपर्क खदान लगाई। इस अतिरिक्त ने खोज स्थल को घातक जाल में बदल दिया।

इस प्रचार-प्रेरित अभियान का अंतिम कार्य मीडिया हेरफेर था। इर्गुन ने गुमनाम रूप से तेल अवीव अखबारों से संपर्क किया और शवों का स्थान बताया। 31 जुलाई को ब्रिटिश सैनिकों ने पत्रकारों के साथ शवों की खोज की। दृश्य भयानक था: सार्जेंट्स के काले पड़े, खून से सने शव पेड़ों से लटक रहे थे, उन पर इर्गुन के संदेश चिपकाए गए थे जो पुरुषों पर „यहूदी-विरोधी अपराधों“ का आरोप लगा रहे थे। कैप्टन डी.एच. गलाटी ने क्षेत्र की जाँच के बाद एक खंभे से जुड़े चाकू से मार्टिन का शव काटना शुरू किया। जब शव गिरा, तो खदान फट गई, मार्टिन के शव को उड़ा दिया, पेस के शव को विकृत कर दिया और गलाटी को चेहरे और कंधे पर घायल कर दिया। प्रेस द्वारा कैद की गई भयावह छवियों ने दुनिया को झकझोर दिया।

वैश्विक निंदा और हिंसक प्रतिक्रियाएँ

इर्गुन द्वारा सार्जेंट क्लिफोर्ड मार्टिन और मर्विन पेस की फाँसी ने ब्रिटेन और उसके बाहर घृणा की लहर पैदा की। हत्याओं की भयावह प्रकृति, उनके प्रतीकात्मक समय और इर्गुन की बेशर्म स्थिति ने राजनीतिक, मीडिया और सार्वजनिक क्षेत्रों में व्यापक निंदा को भड़काया।

ब्रिटिश प्रेस में प्रतिक्रिया त्वरित और कटु थी। द टाइम्स ने एक शक्तिशाली संपादकीय में राष्ट्रीय मूड को कैद किया:

„यह अनुमान लगाना कठिन है कि दो ब्रिटिश सैनिकों की ठंडे दिमाग से हत्या यहूदी कारण को इस देश में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में कितना नुकसान पहुँचाएगी।“

इसी तरह, द मैनचेस्टर गार्जियन ने हत्याओं को आधुनिक राजनीतिक हिंसा के इतिहास में सबसे घृणित कार्यों में से एक करार दिया, नाजी अत्याचारों से तुलना की।

ब्रिटेन में प्रतिक्रिया वाक्पटुता से आगे बढ़ी। 1947 के अगस्त बैंक हॉलिडे वीकेंड के दौरान कई शहरों में यहूदी-विरोधी दंगे भड़क उठे। लिवरपूल, लंदन, मैनचेस्टर और ग्लासगो में यहूदी-स्वामित्व वाले व्यवसायों, घरों और सिनेगॉग्स पर हमले हुए। खिड़कियाँ तोड़ी गई, इमारतें लूटी गई और यहूदी समुदायों को परेशान किया गया — दशकों में ब्रिटेन में सबसे खराब यहूदी-विरोधी हिंसा। दीवारों पर भयावह नारे जैसे „यहूदी हत्यारे“ और „हिटलर सही था“ दिखाई दिए।

इस बीच, फ़िलिस्तीन में प्रतिक्रिया पूरी तरह से अलग थी। इर्गुन ने पछतावा व्यक्त करने के बजाय हत्याओं पर गर्व किया, उन्हें युद्धकालीन प्रतिरोध के न्यायोचित कार्य के रूप में चित्रित किया। अपनी भूमिगत प्रेस में उन्होंने साहसिक घोषणाएँ प्रकाशित कीं जैसे:

„हम युद्ध के एकतरफा नियमों को मान्यता नहीं देते।“

यह बयान इर्गुन की व्यापक वैचारिक स्थिति को दर्शाता था: ब्रिटेन के पास कानून लागू करने या जु़ड़ाव की शर्तें निर्धारित करने की कोई नैतिक अधिकारिता नहीं थी। उनके लिए, सार्जेंट्स की फाँसी अपराध नहीं बल्कि गणना की गई निरोध और अवज्ञा का कार्य थी — ब्रिटिश दमन और अन्याय की उनकी धारणा का जवाब। इस ढाँचे में, नैतिक वैधता अंतरराष्ट्रीय कानून या सार्वभौमिक सिद्धांतों द्वारा परिभाषित नहीं थी बल्कि उनके राष्ट्रीय संघर्ष की कथित धार्मिकता द्वारा। यह तर्कसंगतता — हिंसक प्रतिशोध को एक अवैध कब्जे वाली शक्ति के खिलाफ प्रतिरोध के रूप में चित्रित करना — हमास जैसे बाद के उग्रवादी आंदोलनों की वाक्पटुता में गूँजती है, जो हिंसा को रक्षात्मक कार्रवाई के रूप में उसी तरह उचित ठहराते हैं जो वे विदेशी प्रभुत्व और प्रणालीगत अन्याय के रूप में देखते हैं।

फिर भी, जबकि इर्गुन की कार्रवाइयों ने कुछ जायोनी सर्कलों में समझौताहीन राष्ट्रीय संकल्प की अभिव्यक्ति के रूप में प्रशंसा प्राप्त की, उन्होंने व्यापक यहूदी समुदाय के भीतर गहरा नैतिक असहजता और विदेश में आक्रोश भी पैदा किया। अंतरराष्ट्रीय राय, विशेष रूप से ब्रिटेन और संयुक्त राज्य अमेरिका में, ज़ायोनी कारण के खिलाफ तेजी से मुड़ी, जिसे अब मुक्ति के बजाय आतंकवाद से जोड़ा गया। सार्जेंट्स अफेयर ने इस प्रकार एक खतरनाक विरोधाभास को उजागर किया जो राष्ट्रवादी और विद्रोही आंदोलनों को आज भी सताता है: एक पक्ष द्वारा वीर प्रतिरोध के कार्य माने जाने वाले कार्य दूसरे द्वारा अक्षम्य अत्याचारों के रूप में देखे जा सकते हैं। यह बयान इर्गुन की व्यापक वैचारिक स्थिति को दर्शाता था: ब्रिटेन के पास कानून लागू करने या जु़ड़ाव की शर्तें निर्धारित करने की कोई नैतिक अधिकारिता नहीं थी। उनके लिए, सार्जेंट्स की फाँसी अपराध नहीं बल्कि गणना की गई निरोध और अवज्ञा का कार्य थी — ब्रिटिश दमन और अन्याय की उनकी धारणा का जवाब।

विरासत और ऐतिहासिक महत्व

सार्जेंट्स अफेयर ने फ़िलिस्तीन में ब्रिटिश शासन के विघटन में निर्णायक मोड़ चिह्नित किया। सार्जेंट क्लिफोर्ड मार्टिन और मर्विन पेस की कूर हत्याओं के कुछ महीनों बाद ही ब्रिटिश सरकार ने संयुक्त राष्ट्र को मंडेट समाप्त करने की अपनी मंशा की औपचारिक सूचना दी। दशकों की प्रशासनिक बोझ, बढ़ती हिंसा और राजनीतिक लागतों ने निरंतर नियंत्रण को असहनीय बना दिया था। इर्गुन का अभियान — ब्रिटिश सैनिकों की सार्वजनिक फाँसी में समाप्त — ने न केवल ब्रिटिश मनोबल को गहरा आघात पहुँचाया था बल्कि निरंतर विद्रोह और अंतरराष्ट्रीय जांच के सामने साम्राज्यवादी शक्ति की सीमाओं को भी प्रदर्शित किया था।

नवंबर 1947 में संयुक्त राष्ट्र ने एक विभाजन योजना पर मतदान किया जो फ़िलिस्तीन को अलग यहूदी और अरब राज्यों में विभाजित करेगी, यरूशलेम अंतरराष्ट्रीय नियंत्रण में रहेगा। प्रस्ताव ने लगभग 55% भूमि को यहूदी राज्य को आवंटित किया, जबकि उस समय यहूदी केवल एक-तिहाई आबादी का गठन करते थे और केवल 7% क्षेत्र की कानूनी स्वामित्व रखते थे। निर्णय कई यहूदियों द्वारा उत्साह के साथ स्वागत किया गया और अरब राज्यों तथा फ़िलिस्तीनी अरब नेतृत्व द्वारा कड़ी अस्वीकृति, जिसने नागरिक संघर्ष और अंततः पूर्ण पैमाने पर युद्ध की नींव रखी।

कोई भी शासक ब्रिटिश सम्प्राट कभी इज़राइल राज्य नहीं गया। हाल के वर्षों में शाही परिवार के सदस्यों ने दौरा किया है, लेकिन सत्तर वर्षों तक शासन करने वाली महारानी एलिजाबेथ द्वितीय ने कभी देश में कदम नहीं रखा — एक चूक जिसे अक्सर अनसुलझे राजनीतिक तनाव की सूक्ष्म लेकिन स्थायी अभिव्यक्ति के रूप में व्याख्या किया जाता है जो ब्रिटिश शासन के दर्दनाक अंतिम वर्षों में निहित है।

सार्जेंट्स अफेयर इस प्रकार न केवल चौंकाने वाली हिंसा का क्षण है बल्कि एक ऐतिहासिक मोड़ भी — जहाँ साम्राज्य ढह गया, कूटनीति लड़खड़ा गई और मध्य पूर्व के इतिहास में एक नया, अस्थिर अध्याय शुरू हुआ।

संदर्भ

- बेल, जे. बोवियर. **टेरर आउट ऑफ़ ज़ियोन: द फाइट फॉर इज़राइली इंडिपेंडेंस.** न्यू ब्रांसविक, एनजे: ट्रांजेक्शन पब्लिशर्स, 1996।
- हॉर्न, एडवर्ड. **अ जॉब वेल डन: अ हिस्ट्री ऑफ़ द पैलेस्टाइन पुलिस फोर्स, 1920-1948.** पैलिंडिया प्रेस, 1982।
- मॉरिस, बेनी. **राइटियस विक्टिम्स: अ हिस्ट्री ऑफ़ द ज़ियोनिस्ट-अरब कॉन्फ़िलक्ट, 1881-1999.** न्यूयॉर्क: विंटेज बुक्स, 2001।
- सेगेव, टॉम. **वन पैलेस्टाइन, कम्पलीट: ज्यूज़ एंड अरब्स अंडर द ब्रिटिश मंडेट.** न्यूयॉर्क: हेनरी होल्ट एंड कंपनी, 2000।
- द टाइम्स (लंदन)। „द हैंगिंग ऑफ़ द सार्जेंट्स।“ 31 जुलाई 1947।
- द मैनचेस्टर गार्जियन। „पॉलिटिकल टेरर एंड द ब्रिटिश रिस्पॉन्स।“ 1 अगस्त 1947।
- संयुक्त राष्ट्र महासभा। **रेजोल्यूशन 181 (II): पर्यूचर गवर्नमेंट ऑफ़ पैलेस्टाइन.** 29 नवंबर 1947।
- बीबीसी न्यूज़। „ब्रिटिश ज्यूज़ टार्गेटेड इन 1947 रायट्स आफ्टर पैलेस्टाइन किलिंग्स।“ 31 जुलाई 2017।
- इज़राइल मिनिस्ट्री ऑफ़ फॉरेन अफेयर्स। **द स्टोरी ऑफ़ द ज्यूद्धश अंडरग्राउंड्स।** गिल्बर्ट, मार्टिन. इज़राइल: अ हिस्ट्री. न्यूयॉर्क: हार्पर पेरनियल, 2008।